

विशिष्ट सारांश

भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान (भा.कृ.सां.अ.सं.) की स्थापना सन् 1959 में कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान के रूप में हुई तभी से यह संस्थान कृषि सांख्यिकी में अनुसंधान के साथ-साथ शिक्षण/प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण दायित्व निभा रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रही प्रगति के दृष्टिगत इस संस्थान ने स्वयं को कृषि अनुसंधान की वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप ढाल लिया है। इस परिवर्तित परिवेश में, संस्थान को सौंपे गये कार्य हैं - कृषि सांख्यिकी में मौलिक, अनुप्रयुक्त और अनुकूली शोध करना, कृषि सांख्यिकी एवं संगणक अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाना, परामर्श सेवाएँ प्रदान करना, अनुसंधान हेतु कृषि सांख्यिकी के सूचना कोष के रूप में कार्य करना, कृषि सांख्यिकी एवं संगणक अनुप्रयोग में श्रेष्ठ शिक्षा व प्रशिक्षण के एक उन्नत केन्द्र के रूप में संस्थान को विकसित करना, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के अन्य संस्थानों एवं राज्य कृषि विश्वविद्यालयों (रा.कृ.वि.) एवं राज्य कृषि/पशुपालन विभागों के साथ सम्पर्क बढ़ाना, राष्ट्रीय कृषि सांख्यिकी प्रणाली को विकसित करने एवं सुदृढ़ बनाने में सहायता करना तथा इन विषयों में राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय संगठनों के द्वारा प्रायोजित अनुसंधान करना एवं प्रशिक्षण प्रदान करना।

इस वर्ष संस्थान के विभिन्न प्रभागों - परीक्षण अभिकल्पना, जैवमिति एवं सांख्यिकीय मॉडलिंग, पूर्वानुमान एवं अर्थमिति तकनीक, प्रतिदर्श सर्वेक्षण, संगणक अनुप्रयोग एवं कृषि जैव-सूचना केन्द्र में अनेक अनुसंधान परियोजनाएँ चलायी गयीं। संस्थान में कुल 46 अनुसंधान परियोजनाओं के अन्तर्गत अनुसंधान कार्य किया गया जिनमें से 01 परियोजना राष्ट्रीय आचार्य योजना से, 22 संस्थान द्वारा वित्त पोषित, 12 अन्य बाह्य एजेन्सियों द्वारा वित्त पोषित थीं तथा 11 परियोजनाएँ अन्य संस्थानों के सहयोग से चलायी गयीं। इस वर्ष कुल 11 परियोजनाएँ पूर्ण की गयीं तथा 12 नयी परियोजनाएँ आरम्भ की गयीं।

प्रतिवेदनाधीन अवधि में संस्थान द्वारा राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना के अन्तर्गत दो प्रमुख पहल की गयीं - राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली (एन.ए.आर.एस.) के लिए सांख्यिकीय संगणना का सुदृढ़ीकरण एवं राष्ट्रीय जैव-सूचना ग्रिड की स्थापना।

एन.ए.आर.एस. के लिए सांख्यिकीय संगणना का सुदृढ़ीकरण पर एन.ए.आई.पी. कन्सोर्टियम (www.iasri.res.in/sscnars) आरम्भ किया गया जिसके अन्तर्गत

- सांख्यिकीय संगणना एवं संगणनात्मक सांख्यिकी में अनुसंधान सम्बन्धी मार्गदर्शन करना तथा उन्नत सांख्यिकीय संगणना का सुदृढ़ वातावरण तैयार करना है।
 - एन.ए.आर.एस. के शोधकर्ताओं को सांख्यिकीय संगणना सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए 151 संस्थानों के लिए एक सामान्य उद्देश्य वाला सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर पैकेज अधिप्राप्त किया गया जो कि तीन वर्षों के अद्यतन एवं अपग्रेड्स सहित एन.ए.आर.एस. में सतत् उपयोग के लिए है। इसमें एक एस.ए.एस. इण्टरप्राइज बिजनेस इण्टेलीजेन्स सर्वर भी शामिल है।
 - हाई-एण्ड सांख्यिकीय संगणना सुविधाओं के उपयोग में शोधकर्ताओं के सामर्थ्य निर्माण के लिए एस.ए.एस. : एक सिंहावलोकन पर 30 कार्य-दिवसीय एवं एस.ए.एस. जेनेटिक्स/जे.एम.पी. जिनोमिक्स पर 5 कार्य-दिवसीय, एस.ए.एस. के उपयोग द्वारा आँकड़ों का विश्लेषण विषय पर 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से 83 एन.ए.आर.एस. संगठनों के 209 अनुसंधानकर्ताओं को प्रशिक्षक के रूप में प्रशिक्षित किया गया। एक सप्ताह की अवधि के 43 प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से एन.ए.आर.एस. के 892 शोधकर्ताओं (496 भा.कृ.अनु.प. के संस्थानों से एवं 396 रा.कृ.वि.वि.से) को एस.ए.एस. के उपयोग द्वारा आँकड़ों का विश्लेषण में प्रशिक्षित किया गया। इससे हाई-एण्ड सांख्यिकीय संगणना एवं सांख्यिकीय तकनीकों के उपयोग में कृषि वैज्ञानिकों की सामर्थ्य निर्माण में मदद मिली है और हाई इम्पैक्ट फैक्टर वाले जर्नलों में शोध कार्य को प्रकाशित करने के लिए उनका मार्ग प्रशस्त हुआ है।
 - भारतीय एन.ए.आर.एस. प्रयोक्ताओं को सेवा उन्मुख संगणना उपलब्ध कराने के लिए एक पोर्टल स्थापित किया गया जो एन.ए.आर.एस. प्रयोक्ताओं के लिए आई.पी. प्रमाणीकरण के माध्यम से, <http://stat.iasri.res.in:8080/sscnarsportal> पर उपलब्ध है। भारतीय एन.ए.आर.एस. का कोई भी शोधकर्ता अपने सम्बन्धित संस्थान के नोडल अधिकारी से यूजरनेम तथा पासवर्ड प्राप्त कर सकता है। इस पोर्टल पर किसी भी ब्लॉक अभिकल्पना (पूर्ण अथवा अपूर्ण) एवं स्पिलिट प्लॉट अभिकल्पना से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया जा सकता है।
- वैश्विक स्तर पर कृषि जैव-सूचना के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास के साथ तालमेल रखने के लिए दूसरी पहल राष्ट्रीय कृषि जैवसूचना ग्रिड (एन.ए.बी.जी.) की स्थापना आरम्भ की गयी जो कृषि जैवसूचना

के क्षेत्र में डाटाबेस, डाटा वेयरहाउस, सॉफ्टवेयर एवं टूल्स, एल्गोरिथ्म, जीनोम ब्राउज़र तथा सिस्टमेटिक एवं समेकित पद्धति के माध्यम से हाई-एण्ड संगणनात्मक सुविधाएँ विकसित करने में मदद करेगा। इस परियोजना के अन्तर्गत पांच विभिन्न डोमेन संगठनों, एन.बी.पी. जी.आर., नई दिल्ली; एन.बी.ए.जी.आर., करनाल; एन.बी.एफ.जी. आर., लखनऊ; एन.बी.ए.आई.एम., मउ एवं एन.बी.ए.आई.आई., बंगलुरु को सम्मिलित करते हुए सुपरकम्प्यूटिंग सुविधाएँ विकसित की जाएंगी। यह राष्ट्रीय सुविधा होगी जो देश में जैव-प्रौद्योगिकीय अनुसंधान को सक्षम करने के लिए संगणनात्मक फ्रेमवर्क उपलब्ध कराएगा। एन.बी.जी. का उद्देश्य कृषि जैवसूचना में शोध एवं विकास के लिए सामर्थ्य निर्माण करना भी है।

कुछ अन्य प्रमुख अनुसंधानिक उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं :

- ऐसी परीक्षणात्मक परिस्थितियों, जिनमें परीक्षणात्मक इकाइयों में चरशीलता के दो क्रॉस वर्गीकृत स्रोतों को नियंत्रित करने की आवश्यकता है तथा जिनमें ट्रीटमेन्ट्स की संख्या पुनरावृत्ति की संख्या से काफी अधिक है, के लिए व्यापकीकृत अपूर्ण ट्रोजन-टाइप अभिकल्पनाएँ प्राप्त की गयीं। ट्रीटमेन्ट्स की संख्या (v) ≤ 30 , पंक्तियों की संख्या (m), स्तम्भों की संख्या (n), सेलों का आकार (k), तथा पुनरावृत्ति की संख्या (r) की सूची तैयार की गई।
- पशु-चिकित्सा प्रसाधनों के मूल्यांकन के लिए बायोइक्विवीलेन्स परीक्षण संचालित किये गये। बायोइक्विवीलेन्स परीक्षणों के लिए दक्ष प्रसरण संतुलित अभिकल्पनाएँ प्राप्त कर सूचीबद्ध की गई।
- जैविक अस्तित्व वाले परीक्षणों में प्रायः विभिन्न समयावधियों में प्रत्येक परीक्षण इकाई पर ट्रीटमेन्ट्स के सीक्वेंस का उपयोग शामिल होता है, क्रॉसओवर अभिकल्पनाओं का उपयोग करते हुए संचालित किये जाते हैं। लीनियर प्रोग्रामिंग पद्धति का उपयोग करते हुए सर्क्युलर संतुलित एवं सर्क्युलर स्ट्रिंगली संतुलित क्रॉसओवर अभिकल्पनाएँ प्राप्त करने के लिए एक एल्गोरिथ्म विकसित किया गया।
- डिज़ाइन रिसोर्सेज सर्वर पर आर्थोगोनल अरेज का एक नया लिंक जोड़कर सुदृढ़ बनाया गया तथा किसी भी कारक के अधिकतम 12 स्तरों के बहुउपादानिय ट्रीटमेन्ट संरचना सहित ब्लॉक अभिकल्पनाओं एवं χ^2 -ऑप्टिमल मल्टीलेवल सुपरसेचुरेटेड अभिकल्पनाओं एवं k -सर्क्युलेन्ट मल्टीलेवल सुपरसेचुरेटेड अभिकल्पनाओं की सूचियों को अद्यतन किया गया।
- मल्टीपल पैरेलल लाइन असेज के लिए वैटिड ए-ऑप्टिमल ब्लॉक अभिकल्पनाएँ विकसित की गयीं।
- वर्ष 1999-2000 से 2008-09 के दौरान देश के विभिन्न क्षेत्रों के किसानों के खेतों में संचालित 'रिस्पॉन्स ऑफ़ न्यूट्रिएन्ट्स' परीक्षणों के आँकड़ों से एन.ए.आर.पी. जोन, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर चावल-गेहूँ फ़सल के सीक्वेंस के लिए उर्वरक अनुक्रिया अनुपात (एफ.आर.आर.) प्राप्त किये गये। 6 राज्यों में संचालित 1406 परीक्षणों के आँकड़ों का उपयोग करते हुए विभिन्न उर्वरक संयोजनों जैसे नियंत्रण पर N, NP, NK, NPK; P पर N एवं NK, K पर N एवं NP आठ उर्वरक अनुक्रिया अनुपात प्राप्त किये गये। चावल की फ़सल के लिए NPK का उर्वरक अनुक्रिया अनुपात 6.96 कि.ग्रा/कि.ग्रा. (महाराष्ट्र) से 19.41 कि.ग्रा/कि.ग्रा. (बिहार) के बीच था। महाराष्ट्र, उत्तराखण्ड एवं झारखण्ड को छोड़कर अधिकांश राज्यों में चावल की फ़सल के नियंत्रण पर NPK का एफ.आर.आर. 12 कि.ग्रा/कि.ग्रा. से अधिक था। चावल-गेहूँ फ़सलीय सीक्वेंस में गेहूँ का उर्वरक अनुक्रिया अनुपात चावल की तुलना में, लगभग सभी राज्यों में, निम्न स्तर पर था।
- मेघालय में माँस के उत्पादन के आकलन के लिए एक प्रतिचयन पद्धति विकसित की गयी।
- 49वें मानक मौसम विज्ञान सप्ताह अर्थात् दिसम्बर माह के प्रथम सप्ताह से आरम्भ संबंधी आँकड़ों मौसम का प्रयोग करते हुए द्वितीय "लश पर पाउड्री मिल्ड्यू के प्रथम बार प्रकट होने के लिए पूर्व चेतावनी मॉडल विकसित किये गये। विभिन्न मॉडलों में अधिकतम सापेक्ष आर्द्रता, अधिकतम तापमान, हवा की गति एवं उनके इण्टरेक्शन्स महत्वपूर्ण पाए गये। इन मॉडलों का प्रयोग करते हुए 50वें smw पर सबसे पहला पूर्वानुमान प्राप्त किया जा सकता है जिसे बाद में संशोधित भी किया जा सकता है।
- अरैखीय काल श्रेणी मॉडलों की श्रेणी में आवधिक अस्थिरता दर्शाने वाले आँकड़ों की व्याख्या करने के लिए चरघातांकी स्व-समाश्रयी मॉडलों का उपयोग किया जा सकता है। पूर्वानुमानों से एक स्टेप से ज्यादा आगे के पूर्वानुमान के लिए 'कन्डीशनल एक्सपेक्टेडन्स' की अवधारणा का उपयोग करते हुए विश्लेषणात्मक फार्मूले विकसित किये गये। केरल में ऑयल सरडाइन कैचेज की मॉडलिंग एवं पूर्वानुमान के लिए चरघातांकी स्व-समाश्रयी मॉडल की व्याख्या की गयी।
- विषय वस्तु विशेषज्ञों द्वारा लगभग 50 भरी हुई प्रश्नावलियों से बारानी कृषि में प्रौद्योगिकियों की कल्पना/कारकों की प्राथमिकता के लिए रैखिक संयोजन भारित स्कोरिंग, बहुविमीय स्केलिंग एवं विश्लेषणात्मक अनुक्रम प्रक्रिया विधियों का उपयोग किया

गया । परिणामों से ज्ञात हुआ कि बारानी क्षेत्रों में उच्च उत्पादकता प्राप्त करने के लिए फ़सलों की स्थायित्वता को उच्चतम अनुसंधान प्राथमिकता दी जानी चाहिए तथा उसके बाद अर्ली मैच्योरिटी, ब्रॉड एडॉप्शन, स्ट्रेस रसिस्टेन्स एवं उच्च उपज क्षमता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए ।

- दूरी संतुलित प्रतिचयन योजनाओं का गुण है कि सेकेन्ड आर्डर इन्क्लूजन प्राथिकताएँ दो समीपस्थ इकाइयों के बीच की दूरी का गैर-द्वयमान फलन होती हैं और उस समष्टि से प्रतिचयन के लिए उपयुक्त है जिसमें समय अथवा स्थान में इकाइयों की प्राकृतिक आर्डरिंग के कारण समीपवर्ती इकाइयाँ सदृश प्रेक्षण उपलब्ध कराती हैं । रैखिक पूर्णांक प्रोग्रामिंग का प्रयोग करते हुए डिस्टेन्स बैलेन्सड सैम्पलिंग योजनाएं प्राप्त की गयी ।
- मेंथा तेल के भावी व्यापार पर अध्ययन से ज्ञात हुआ कि प्रथम अन्तर पर दो कीमत श्रृंखलाएँ अर्थात् भावी एवं वर्तमान, स्थिर हो जाती है । गत वर्षों की तुलना में वर्ष 2008 और 2009 में वित्तीय विशोभ में सतत् अस्थिरता बहुत गंभीर थी । भावी मूल्य श्रृंखला की तुलना में, स्पॉट मूल्य श्रृंखला में सतत् अस्थिरता के उच्च स्तर को दर्शाया गया।
- आँकड़ों में उपस्थित अधिकतम विविधता को स्पष्ट करने के लिए अपेक्षित मॉलीक्यूलर मार्कर्स के संयोजनों एवं इष्टतम संख्या का निर्धारण एवं पहचान करने के लिए एक एल्गोरिथम विकसित किया गया । नमी स्ट्रेस, सबमर्जेन्स, खारापन, फ़सल के लिए ठण्डा एवं गर्मी, पशु, मछली, एवं सूक्ष्म जीव प्रजातियों जैसे विभिन्न ट्रेट्स के एबायोटिक स्ट्रेस रिलेटेड जीन्स पर जीनोमिक सीक्वेन्स सूचना की एक लाइब्रेरी तैयार की गयी । प्रजातियों में एबायोटिक स्ट्रेस टॉलरेन्स ट्रेट्स के लिए उत्तरदायी जीन्स के फाइलोजेनेटिक विश्लेषण का अध्ययन किया गया तथा संरचनात्मक विजुअलाइजेशन के माध्यम से संरक्षित क्षेत्रों के लिए तुलना की गयी । चावल के लिए कोर जर्मप्लाज्म के एकत्रिकरण पर एक डाटाबेस तैयार किया गया और ऑनलाइन प्रविष्टि प्रपत्र तैयार किये गये ।
- विभिन्न वाटर मार्किट्स के अन्तर्गत ग्राउण्ड वाटर मार्किट्स एवं महत्वपूर्ण फ़सलों की लागत एवं प्रतिदाय की संरचना एवं निर्धारकों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि ग्राउण्ड वाटर मार्किट्स गंगा के उच्च, मध्यम एवं निम्न मैदानी इलाकों के इलेक्ट्रिक ट्यूबवेल कमांड वाले क्षेत्रों में सक्रिय रूप से कार्यरत हैं ।
- परमिसनेट तंत्र को पासपोर्ट सूचना, व्यक्ति विशेष का यूजरनेम एवं पासवर्ड, व्यक्ति विशेष को सूचना अद्यतन करने का

अधिकार देना, मानवशक्ति नियोजन रिपोर्टों एवं मॉनीटरिंग रिपोर्टों का सुदृढीकरण जैसे नये मॉड्यूलस से समृद्ध किया गया । यद्यपि व्यक्ति विशेष द्वारा पासपोर्ट सम्बन्धित सूचना को सम्बन्धित नोडल अधिकारी से यूजरनेम एवं पासवर्ड की जानकारी लेकर अद्यतन किया जा सकता है ।

- शैक्षणिक सत्र 2009-10 से भा.कृ.अ.सं. के पी.जी. स्कूल में क्रियान्वित स्नातकोत्तर शिक्षा के लिए ऑनलाइन प्रबन्धन तंत्र को, पेन्डिंग वर्क स्टैटस, को प्रयोक्ता के होमपेज पर दर्शाना एवं ऑटो ई-मेल सुविधा के साथ सुदृढ बनाया गया । वर्तमान में, इस तंत्र में 522 छात्र तथा 503 संकाय सदस्य पंजीकृत हैं । इस तंत्र में 23 विषयों में 1126 पाठ्यक्रम सूचीबद्ध हैं ।
- ऑनलाइन विशेषज्ञ तंत्र के निर्माण के लिए एग्रिदक्ष विकसित किया गया । इसमें नॉलेज मॉडल क्रिएशन, ज्ञान प्राप्ति समस्या की पहचान, नॉलेज रिट्रिव करने, विशेषज्ञों से प्रश्न पूछने एवं प्रशासन के मॉड्यूलस हैं । एग्रिदक्ष डोमेन विशेषज्ञों को, नॉलेज इन्जीनियर्स एवं प्रोग्रामर्स के कम से कम हस्तक्षेप से, उनकी फ़सल के ऑन लाइन विशेषज्ञ तंत्र को निर्माण करने में सक्षम बनाता है । मक्का एग्रिदक्ष प्रथम तंत्र है जो एग्रिदक्ष का प्रयोग करते हुए मक्का अनुसंधान निदेशालय, नई दिल्ली के सहयोग से विकसित किया गया । मक्का एग्रिदक्ष मक्के की फ़सल पर आई.सी.टी. आधारित सलाह उपलब्ध कराता है तथा इसमें विचार-विमर्श की सहायता से विशेषज्ञों के साथ इण्टरेक्ट किया जा सकता है। मक्का एग्रिदक्ष <http://expert.iasri.res.in/agridaksh> पर ऑन लाइन उपलब्ध है ।
- राष्ट्रीय बीज मसाला अनुसंधान केन्द्र, अजमेर के सहयोग से 04 प्रमुख तथा 06 गौण बीज मसालों की फ़सल प्रबन्धन के लिए 'बीज मसालों पर विशेषज्ञ तंत्र' विकसित किया गया । यह किस्म के चयन, खेत तैयार करने, उर्वरक डालने, सिंचाई की शिड्यूलिंग, कीट/रोगों/निमेटोड्स से पौध सुरक्षा के लिए विशेषज्ञ सलाह उपलब्ध कराता है । यह तंत्र <http://iasri.res.in/expss> पर उपलब्ध है ।
- भा.कृ.अ.प. का परियोजना सूचना एवं प्रबन्धन तंत्र जो <http://pimsicar.iasri.res.in/> पर उपलब्ध है, को वेब सक्षम तंत्र के रूप में विकसित किया गया जो भा.कृ.अनु.प. के अन्तर विभागीय एवं विभागीय दोनों स्तरों पर अनुसंधान परियोजनाओं में डुप्लीकेशन को चेक करने में मदद करता है । अनुसंधान गतिविधियों के डुप्लीकेशन की पहचान करने में मदद करने के लिए, डुप्लीकेट डिटेक्शन मॉड्यूल के विकास के लिए ऑटो एक्सट्रैक्ट कीवर्ड आधारित सर्च पद्धति का प्रयोग किया गया ।

- ऑन-लाइन इण्टरेक्टिव स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए एक ई-लर्निंग प्लेटफार्म 'ई-लर्निंग एग्रिकल्चर' विकसित किया गया एवं उसे कृषि विज्ञान के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के लिए क्रियान्वित किया गया। यह <http://www.elearnagri.iasri.res.in/home> पर उपलब्ध है। यह तंत्र कृषि शिक्षाविदों को उनके पाठ्यक्रम कण्टेन्ट्स ऑनलाइन उपलब्ध करने का अवसर प्रदान करता है।
- पार्शियली बैलेंस्ड ब्लॉक अभिकल्पनाओं की सूची तैयार करने, संरचना करने एवं आँकड़ों के विश्लेषण के लिए क्लाईन्ट-सर्वर आर्किटेक्चर का उपयोग करते हुए एक वेब आधारित सॉफ्टवेयर तैयार किया गया।

संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर के जर्नलों में कुल 49 शोध पत्र, 09 लोकप्रिय लेख, 02 पुस्तक अध्याय एवं 25 परियोजना/तकनीकी रिपोर्टें/संदर्भ मैनुअल्स प्रकाशित किये गये।

राष्ट्रीय प्राध्यापक, डॉ. विनोद कुमार गुप्ता को भारतीय कृषि सांख्यिकी संस्था द्वारा 'सांख्यिकी भूषण' की प्रतिष्ठित उपाधि से सम्मानित किया गया। डॉ. विजय कुमार भाटिया एवं डॉ. राजेन्द्र प्रसाद 01 जनवरी 2011 से राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी के फेलो चुने गये।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को भारतीय कृषि सांख्यिकी संस्था द्वारा वर्ष 2009-10 के लिए 'प्रो. पी.वी. सुखात्मे स्वर्ण पदक' प्रदान किया गया।

डॉ. रंजना अग्रवाल को वैज्ञानिक लेख 'मौसम चरों पर आधारित' फ़सलों का पूर्वानुमान' के लिए केन्द्रीय सचिवालय, हिन्दी परिषद् द्वारा अखिल भारतीय महिला विशेष पुरस्कार (2008-09) से पुरस्कृत किया गया।

डॉ. अनिल कुमार को हाई-टेक बागबानी संस्था द्वारा युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2010 प्रदान किया गया।

पाण्डिचेरी विश्वविद्यालय, पाण्डिचेरी में आयोजित 'इण्टरनेशनल कॉन्फ़ेस ऑन फाइनेन्शियल डेरीवेटिव्स' में एस.पी. भारद्वाज, एवं ए.के. वशिष्ठ, द्वारा लिखित 'मार्किट एफिशियेन्सी इन कमोडिटी फ्यूचर्स - ए केस स्टडी' नामक शोध पत्र को रुपये 5000/- का श्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार प्रदान किया गया। डॉ. विजय कुमार भाटिया, डॉ. लालमोहन भर, डॉ. हुकुम चन्द्र, डॉ. हिमाद्रि घोष, डॉ. प्रज्ञेय एवं डॉ. रामासुब्रमण्यन को भारतीय कृषि सांख्यिकी संस्था द्वारा जर्नल ऑफ इण्डियन सोसायटी ऑफ एग्रीकल्चरल स्टेटिस्टिक्स में 2009-10 के दौरान प्रकाशित श्रेष्ठ शोधपत्र पुरस्कार प्रदान किए गए।

डॉ. विजय कुमार भाटिया एवं डॉ. यू.सी. सूद को युगाण्डा में आयोजित कृषि सांख्यिकी पर पाँचवें अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन के लिए प्रतिनियुक्त किया गया। डॉ. सुशीला कौल एवं श्रीमती संगीता आहुजा

को क्रमशः टर्की एवं जर्मनी में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों में शोधपत्र प्रस्तुत करने के लिए प्रतिनियुक्त किया गया। डॉ. प्रज्ञेय आगन्तुक अध्येता के रूप में नार्थ कैरोलिना विश्वविद्यालय, ग्रीन्सबोरो, यूएसए गये।

संस्थान के पाँच वैज्ञानिकों ने प्रौद्योगिकीय पूर्वानुमान, फ़सल विज्ञान जैव सूचना, पॉलिसी विश्लेषण के लिए मल्टीमार्किट मॉडलिंग एवं दूरसंवेदी एवं भौगोलिक सूचना तंत्र के प्रयोग पर राष्ट्रीय कृषि न्वोन्मेषी परियोजना के अन्तर्गत विदेशों में गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इस वर्ष निम्नलिखित 27 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये जिसमें 553 प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया गया।

- (i) दक्षिण राष्ट्रों के अधिकारियों के लिए भारत में कृषि सांख्यिकी प्रणाली (ii) येमेन के प्रतिभागियों के लिए खाद्य सुरक्षा के लिए पूर्व-चेतावनी तंत्र एवं (iii) एफ्रो-एशियन ग्रामीण विकास संगठन सदस्य राष्ट्रों के प्रतिभागियों के लिए कृषि सर्वेक्षण में सुदूर संवेदन एवं जी.आई.एस. का अनुप्रयोग पर तीन अन्तरराष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- उन्नत संकाय प्रशिक्षण केन्द्र के अन्तर्गत कृषि में सांख्यिकीय मॉडलिंग विषय पर एक 21 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- कृषि में विशेषज्ञ तन्त्रों का विकास पर शीतकालीन स्कूल।
- भारतीय सांख्यिकी सेवा (आई.एस.एस.) के XXXवें बैच के परिवीक्षाधीन अधिकारियों के लिए सांख्यिकीय पैकेजों से आँकड़ों का विश्लेषण विषय पर सी.एस.ओ. द्वारा प्रायोजित 24 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन के सेवारत अधिकारियों एवं राज्य सरकारों/संघ शासित क्षेत्रों के वरिष्ठ अधिकारियों के लिए लघु क्षेत्र आकलन पर एक पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं के अन्तर्गत संचालित 16 प्रशिक्षण कार्यक्रम
 - एन.ए.आर.एस. के लिए सांख्यिकी संगणना के सुदृढीकरण पर एन.ए.आई.पी. कन्सोर्टियम के अन्तर्गत 12 प्रशिक्षण कार्यक्रम (i) एस ए एस ई बी आई सर्वर के लिए एस ए एस प्लेटफार्म का प्रशासन प्रशिक्षण (ii) एस ए एस इन्स्टालेशन प्रशिक्षण (iii) एस ए एस : एक सिंहावलोकन (iv) एस ए एस जेनेटिक्स/JMP जीनोमिक्स (v) एस ए एस का प्रयोग करते हुए कृषिवानिकी परीक्षणों के आँकड़ों का विश्लेषण (vi) एस ए एस का प्रयोग करते हुए आँकड़ों के विश्लेषण पर शोधकर्ताओं के लिए 7 प्रशिक्षण कार्यक्रम।

- बायो प्रोस्पेक्टिंग ऑफ जीन्स ऐण्ड एलील माइनिंग फॉर एबॉयोटिक स्ट्रेस टोलरेन्स पर एन.ए.आई.पी. कन्सोर्टियम के अन्तर्गत 'सांख्यिकीय एवं संगणनात्मक जीनोमिक्स डाटा विश्लेषण' पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम ।
- V-PAGe पर एन.ए.आई.पी. कन्सोर्टियम के अन्तर्गत 'प्रौद्योगिकीय पूर्वानुमान पद्धतियों पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- राष्ट्रीय कृषि जैवसूचना ग्रिड के अन्तर्गत कृषि अनुसंधान के लिए जैवसूचना संसाधन एवं साधनों पर दो प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- भा.कृ.अनु.प. मुख्यालय के अधिकारियों के लिए तीन अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम, एक अंशकालिक - दो दिवसीय विशेष कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा दो पूर्णकालिक - दो दिवसीय विशेष कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये ।
- नेशनल काउन्सिल ऑफ एप्लाइड इकोनोमिक रिसर्च-सेन्टर फॉर मैक्रो कन्स्यूमर रिसर्च में समाजार्थिक अध्ययन हेतु अनुसंधान पद्धति पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम ।
- रिजाल्वेबल डिजाइन्स एवं डिजाइन रिसोर्सेस सर्वर पर एक यात्रा कार्यशाला एवं प्रशिक्षण चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में आयोजित की गयी, जिसमें 50 सहभागी थे।

राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान सांख्यिकीविदों के सोलहवें सम्मेलन का आयोजन किया गया ।

दो लाँच कार्यशालाएँ आयोजित की गयीं - (i) एन.ए.आर.एस. के लिए सांख्यिकीय संगणना के सुदृढीकरण पर एन.ए.आई.पी. कन्सोर्टियम तथा (ii) राष्ट्रीय कृषि जैवसूचना ग्रिड ।

संस्थान द्वारा 20 अक्टूबर 2010 को प्रथम विश्व सांख्यिकी दिवस मनाया गया तथा इस अवसर पर एक संगोष्ठी आयोजित की गयी ।

भा.कृ.सां.अ.सं., नई दिल्ली; राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंधन अकादमी, हैदराबाद; जल अनुसंधान निदेशालय, भुवनेश्वर एवं केन्द्रीय कृषि

अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल में भा.कृ.अनु.प. के संस्थानों के नोडल अधिकारियों के लिए PIMS-ICAR पर 04 सेंसीटाइजेशन प्रशिक्षण कार्यशालाएँ आयोजित की गयीं।

रा.कृ.वि.वि. के नोडल अधिकारियों के लिए भा.कृ.सां.अ.सं., नई दिल्ली एवं आनन्द कृषि विश्वविद्यालय, आनन्द में NISAGENET पर 03 सेंसीटाइजेशन प्रशिक्षण कार्यशालाएँ आयोजित की गयीं।

पाँच संगोष्ठियाँ आयोजित की गयीं - (i) एन.ए.आर.एस. की आर. ऐण्ड डी. दक्षता में सुधार लाने में भा.कृ.सां.अ.सं. की भूमिका (ii) भा.कृ.अनु.प. के प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन विभाग के संस्थानों की आर. ऐण्ड डी. दक्षता में भा.कृ.सां.अ.सं. की भूमिका को बढ़ाना (iii) भा.कृ.अ.प. के पशु विज्ञान प्रभाग के साथ एन.ए.आर.एस. की अनुसंधान एवं विकास दक्षता को बढ़ाने में भा.कृ.सां.अ.सं. की भूमिका (iv) भा.कृ.अनु.प. में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयासों का समाकलन (v) भा.कृ.अनु.प. में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ।

संस्थान की शिक्षण एवं प्रशिक्षण सम्बन्धी गतिविधियाँ, जिनमें समस्त स्नातकोत्तर अध्यापन कार्यक्रमों का नियोजन, आयोजन एवं समन्वयन शामिल है, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के स्नातकोत्तर स्कूल के सहयोग से चलायी गयीं । इस वर्ष कुल 10 छात्रों {06 एम.एससी. (कृषि सांख्यिकी) एवं 04 एम.एससी. (संगणक अनुप्रयोग)} ने अपना डिग्री पाठ्यक्रम पूरा किया । 20 नये छात्रों {05 पीएच.डी. (कृषि सांख्यिकी), 09 एम.एससी. (कृषिसांख्यिकी) एवं 06 एम.एससी. (संगणक अनुप्रयोग)} को प्रवेश दिया गया ।

कृषि सांख्यिकी एवं संगणक में एक उच्च प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम आयोजित किया गया । इस प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम में भारत एवं श्रीलंका के 22 अधिकारियों ने सहभागिता की ।

हिन्दी को प्रोत्साहन देने के लिए संस्थान में एक 'शोध-पत्र-पोस्टर-प्रदर्शन प्रतियोगिता' आयोजित की गयी जिसमें हिन्दी पोस्टर तैयार करने में उल्लेखनीय योगदान देने वाले कर्मियों को पुरस्कृत किया गया ।